9-2-68

प्रातः क्लास पिताश्री ओमशान्ति आत्माभिमानी हो बैठे हैं? ५८०९

ओमशान्ति। बाप-दादा का विचार होता है बच्चों से एक सेकण्ड में लिखा ही कर लेवें कि किसकी याद में बैठे हो। यह लिखने में कोई टाइम नहीं लगता है। हरेक एक सेकन्ड में लिख कर बाबा को दिखा कर जावे। (सभी ने लिखा और बाप दादा को दिखाया, फिर बाबा ने भी लिखा। बाबा ने जो कुछ लिखा सो और कोई ने नहीं लिखा। बाबा ने लिखा अल्फ और बे) देखो बाबा कितने सेकण्ड में लिखा। अल्फ बे। कितना सहज है। अल्फ माना बाबा, बे माना बादशाही। बाबा पढ़ाते हैं और तुम राजाई प्राप्त करते हो। और कुछ जास्ती लिखने की दरकार ही नहीं। तुम ने तो लिखने में एक दो मिनट भी लगाया। अल्फ बे सेकण्ड की बात है। सन्यासी लोग अल्फ को याद करेंगे। तुमको तो राजाई भी याद है। जो हीरे जाते हैं बुधि में बैठा हुआ है तो खुशी का पारा चढ़ता रहेगा। अल्फ का अर्थ फिर कितना बड़ा है। हाईस्ट चोटी। उन से ऊपर कोई चीज है नहीं। ऊंच ते ऊंच रहने का स्थान है। यह कोई मनुष्य थोड़े ही जानते हैं। सेकण्ड में जीवनमुक्ति का अर्थ क्यों कुछ होगा ना। बच्चा पैदा होता है तो सब लिखते हैं इतने घंटे, इतने मिनट, इतने सेकण्ड। टिक चलती है ना। टिक हुई अल्फ बे बस। सेकण्ड भी नहीं लगता। कहने की भी दरकार नहीं। याद तो है ही ना। तो बच्चों की इतनी अच्छी अवस्था भी होनी चाहिए। परन्तु वह तब ही होगी जब याद करते रहेंगे। यहां बैठे हैं तो बाप और राजाई की याद आनी चाहिए। बुधि देखते है जिसको दिव्यदृष्टि कहा जाता है। आत्मा ही देखती है। बाप को नहीं याद करती होगी तो तुम भी बाप को याद करो तो राजाई भी इकट्ठी याद आयेगी। कितनी देरी लगती है। याद में तो रहना ही है ना। सेकण्ड की भी बात नहीं। यहां बैठे2 भी बाप की याद में तो भी बहुत गद गद होंगे। बाबा इस खुशी में बैठे है ना। बाबा को तो यहां की कोई बात याद भी नहीं। याद करते ही हैं वहां की बातें। बाबा और राजाई। जैसे कि दर पर खड़ी है राजाई बाप कहते हैं तुम बच्चों के लिए राजाई ले आया हूं। तुम सिर्फ याद नहीं करते हो इसलिए वह खुशी नहीं ठहरती। मुख्य है ही याद की यात्रा। उठते-बैठते चलते-फिरते सिर्फ बाप कहते हैं बाप को याद करो। अपने को आत्मा समझ बाप और वर्से को याद करो। कितना ऊंचा है। तुम कहां रहते हो दुनिया थोड़े ही जानती है। मनुष्य मुक्ति में जाने लिए कितना माथा मारते हैं। अभी मुक्तिधाम है कहां तुम ही समझते हो। आत्मा तो राकेट है ना। वह लोग तो कर के चन्द्रमा तक जाते हैं फिर है पोलार। तुम तो पोलार से भी ऊंचे जाते हो। चन्द्रमा तो इस दुनिया का है। कहा जाता है सूर्य-चन्द्र से भी परे। आवाज़ से परे। इस शरीर को भी छोड़ देना है। तुम आते ही हो स्वीट साइलेन्स होम से। आने-जाने में टाईम नहीं लगता है। अपना घर है। यहां तो कहां भी जाओ टाईम लगता है। आत्मा शरीर को छोड़ती है तो कहां का कहां चली जाती है सेकन्ड में। एक शरीर छोड़ दूसरे में जाय प्रवेश करती है। तो अभी अपने को आत्मा समझना है। तुम बहुत ऊंची चोटी पर जाते हो। मनुष्य शान्ति चाहते हैं, शान्ति की हाईस्ट है ही। निराकारी दुनिया। और सुख की भी हाईस्ट चोटी है ना। ऊंच ते ऊंच टावर। ऊंच ते ऊंच को टावर कहा जाता है। तुम्हारा घर भी कितना ऊंचा है। दुनिया कब इन बातों पर ख़याल नहीं करती है। उन्हों को समझाने वाला तो कोई है नहीं। तो इसको कहा जाता है शान्ति का टावर। मनुष्य विश्व में शान्ति2 करते रहते हैं परन्तु अर्थ थोड़े ही समझते हैं। भल ज़बान मनुष्य की है परन्तु एक जानवर मिश्र है। इसलिए मनुष्य को बन्दर साथ में की जाती है। विकार भी उन में होता है। हवश भी होता है। क्रोध भी विकार है ना। देवताओं में हवश वा लोभ आदि नहीं होता। वहां तो खान-पान, बोलना करना, उठना-बैठना बड़ा रायल होता है। और फिरिश्ता भी हैं हाईस्ट टावर। यह ल०ना० टावर में हैं ना। इन्हों की कितनी महिमा है। क्योंकि इन्हों ने बहुत मेहनत की है। यह एक तो नहीं। माला बनी हुई है ना। वास्तव में 9रत्न गाये हुये हैं। सिर्फ इन्हों ने गुप्त मेहनत की होगी। अन्दर में बाप और वर्सा याद रहे। यही अन्दर जपना है। बाप को याद करने से विकर्मीनाश होंगे। माया यह याद भी जपने नहीं देती है। बहुत ही शैतानी कराते हैं। कब क्रोध, कब लोभ, कब मोह।

बहुत तूफान आते हैं। अपनी नब्ज़ आपे ही देखनी है। नारद को भी कहा ना अपनी शिकल देखो। वह अवस्था अभी नहीं है। बनानी है। बाबा एमआब्जेक्ट तो जरूर बनावेंगे ना। अन्दर में पुरुषार्थ करते रहो। आगे चल कर वह अवस्था तुम्हारी होगी। अशरीरी होने का प्रेक्टीस करते रहो। मैं आत्मा हूं। अब जाना है वापस। बाबा ने कहा मुझे याद करो। यह न करेंगे तो सज़ा भी खानी पड़ेगी। और फिर पद भी कम। यह बहुत ही गुप्त बातें हैं। वह सायंस में कितना डीप जाते हैं क्या2 बनाते रहते हैं। वह भी संस्कार तो चाहिए ना। जो फिर वहां भी जाकर वह चीज़ें बनावेंगे। सिर्फ यही दुनिया बदली होनी है। यहां के संस्कार अनुसार ही वहां जाकर जन्म लेंगे। जैसे लड़ाई वालों की बुधि लड़ाई का ही संस्कार रहती है तो वह संस्कार ले जाते हैं। लड़ने बिगर रह न सकेंगे। आफिस के पास बड़ी क्यू लगी रहती है। एक उक की जांच करते हैं, कोई बीमारी तो नहीं। आंख, कान आद सब ठीक है। लड़ाई में तो सभी अंग ठीक चाहिए ना। इसमें भी दिखाया जाता है कौन विजय माला के दाना बनेंगे। जो कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। आत्मा नंगे आई थी नंगे ही जाना है। वहां शरीर का कोई सम्बन्ध नहीं। अभी अशरीरी बनना है। आत्मायें वहां से ही आती है, आकर शरीर में प्रवेश करती है। ढेर ढेर आत्मायें आती रहती है। सभीको अपना2 पार्ट मिला हुआ है। जो नये प्युर आत्मायें आती है उनको जरूर वहां सुख मिलेगा। इसलिए उनकी महिमा होती है। बड़ा झाड़ है ना। कितने नामीग्रामी बड़े2 आदमी है। अपने2 ताकत अनुसार बड़े ही सुखी होंगे। तो अब बच्चों को मेहनत यह करनी है। कर्मातीत अवस्था में प्युर हो कर जाना है। अपनी चाल को देखनी है किसको दुःख तो नहीं देते हैं। बाप कितना मीठा है। बिलवेड फ्रास्ट है ना। तो बच्चों को भी बनना है। यह तो तुम जानते हो बाप यहां है। मनुष्यों को यह थोड़े ही मालूम है कि बाप यहां स्थापना कर रहे हैं। फिर भी जन्म-जन्मान्तर उनको याद करते आते हैं। शिव के मंदिर में जाये कितनी पूजा आद करते हैं। कितने ऊंच चोटी पर जाते हैं। अच्छे लगते हैं। क्योंकि इतना मीठा है ना। गाते भी हैं ऊंच ते ऊंच भगवान। बुधि में निराकार ही याद आवेगा। निराकार तो एक ही है। फिर हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। उन्हों को भगवान कभी कहेंगे। अभी तुम समझते हो हमारी सतोप्रधान देवता थे। विश्व के मालिक थे। इतने 500 करोड़ मनुष्य थे ही नहीं। सिर्फ भारत में ही राज्य होगा। बाकी सभी शरीर छोड़ कर चले जावेंगे शांति धाम। यह भी सब तुम आगे चल कर देखेंगे। इसमें बड़ी विशाल बुधि चाहिए। इतने सब चले जावेंगे। सिवाय एक धर्म के, और कुछ भी न रहेगा। सिर्फ भारत ही रहेगा। अगर होंगे भी तो पहाड़ ही होंगे। शायद पहाड़ भी ढक जाते होंगे। अगर जलमई कहे तो क्या इतने2 ऊंचे2 पहाड़ियां है हिमालय आद क्या सब चले जावेंगे। इतना पानी ऊंच चढ़ जावेगा। वहां तो तुमको कहां पहाड़ों आद भी जाने की दरकार नहीं रहती। ऐसे नहीं तुम कहां घूमने जावेंगे। कहां भी जाने की दरकार नहीं। कोई भी एक्सीडेन्ट आद नहीं। वह है ही वन्डर आफ वर्ल्ड स्वर्ग। पैराडाईज़। यहां सात वन्डर कहते है ना। वह हैं मायावी। ईश्वरीय वन्डर है स्वर्ग। वह स्वर्ग का वन्डर अभी न है तो माया के वन्डर्स बनते हैं। यह बातें मनुष्य समझ न सके। जब बहुत मज़बूत हो जावे तब कुछ सुनने लायक बने। अभी तुम स्वर्ग में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। वह है सुख की चोटी। टावर। अभी अभी है दुःख की चोटी। लड़ाई में कितने ढेर मरते हैं सारी दुनिया में तो 5-7 लाख जरूर रोज़ मरते होंगे। और फिर जन्मते भी होंगे जाती। गाया भी जाता है ना ईश्वर का अन्त नहीं पाया जाता। अब ईश्वर हुआ बिन्दी उनका अन्त क्या पावेंगे। बाप कहते है इस रचना के आदि, मध्य, अन्त को कोई जान न सकते। साधू, सन्त आद कोई भी इस रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त नहीं पाये सकते हैं। तुमको बाप पढ़ाते हैं। इसको पढ़ाई कहा जाता है। बिन्दी का अन्त क्या पावेंगे। बाकी सृष्टि चक्र के राज़ को अभी तुम जान रहे हो। वह तो कहते हम नहीं जानते हैं। या तो फिर लाखों वर्ष कह देते हैं। तुमको अभी बाप ने समझाया है तुम जो कुछ भी यहां देखते हो वह न रहेगा। स्वर्ग है टावर आफ सुख। सुख की ऊंच चोटी।

यहां तो दुःख ही दुःख है। अचानक मौत आवेगा सभी खतम हो जावेंगे। मौत देखना मासी का घर नहीं है। इनको दुःख की चोटी ही कहना पड़ेगा। वह है सुख की चोटी। दूसरा कोई अक्षर है नहीं। और कोई इस सुख की खुशी के घोड़े हो जानते हैं। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो सुनते हैं फिर भी भूल जाते हैं। यह नालेज धारण तब ही होगी जब बुद्धि गोल्डेन एजेड होगी। धारणा नहीं होती है तो खुशी भी नहीं रह सकती। एकदम हाईएस्ट पढ़ने वाले भी है तो लास्ट पढ़ने वाले भी हैं। पढ़ाई में भी फर्क तो है ना। कितना भी बेहद का बाप समझावे परन्तु कब नहीं समझे। याद बिगर तो तुम कब भी प्योर बन नहीं सकेंगे। बाप ही चमत्कार है। वह तो एकदम हाईएस्ट पॉवर वाला है। उन पर कट चढ़ नहीं सकती। बाकी तो सभी पी कट चढ़ती है उनको उतार फिर सतोप्रधान बनना है। बाप कहते हैं मामेकं याद करते रहो। और कोई में ममत्व न रहे। शाहुकारों को सारा दिन धन-दौलत ही सामने आती रहेगी। गरीबों को तो कुछ भी नहीं। परन्तु गरीब भी कुछ समझ हो ना। जो धारणा भी कर सके। याद बिगर कचड़ा कैसे निकलेगा। हम प्योर कैसे बनेंगे। तुम यहां आये ही हो ऊंच चोटी पर जाने। तुम जानते हो हम बाप की शिक्षा पर चलने से ही हम ऊंच सुख की चोटी पर जो वेंगे। वह है टावर ऑफ सुख। इसमें मेहनत है। बाप आये ही हैं टावर में ले जाने के तो श्रीमत पर चलना पड़े। पहले नम्बर में इनका ही मकान है। वह एकदम टावर में होंगे। (ल0ना0) फिर कुछ न कुछ कम। नई दुनिया को हीटवर ऑफ सुख कहा जाता है। वहां तो मैले आदि कोई चीज़ होती ही नहीं। ऐसी गिन्दगी ही नहीं होती तो मैला हो। न ऐसी हवायें ही लगती है जो मकानों को खराब करें। न कचड़ा वहां होता ही नहीं। स्वर्ग की तो बहुत महिमा है। इसके लिए पुरुषार्थ करना है। ल0ना0 कितने ऊंच है। इनको देखनेसे ही दिल खुश होती है। आगे चल बहुतों का सा0 भी होते रहेंगे। शुरू में कितना सा0 होता था। कितना बाबा ने जलवा दिखाया। ताज आदि पहन कर आते थे। वह चीज़ तो यहां मिल भी न सके। बाबा तो जवाहरी है। आगे जो 50 हजार में मणी लेते थे वह अभी 50 लाख में भी कहां मिल न सके। होंगे ही नहीं कहां। बहुत कर के राजायें लोग सेठ्ठी के लिए विलायत में भेज देते हैं। वैसे तो सभी के विलायत में हैं ढेर। भारत में तो कुछ भी नहीं है। उधार लेते रहते हैं। कर्जा का हिसाब निकालो तो कितने मिलियनेयर हो जाती है। तो तुम स्वर्ग के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। यहां अथाह सुख है। बाप इतना ऊंच पढ़ाते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं है। रात-दिन का फर्क पड़ जाता है। कहां राजा-रानी, कहां मेहतर आदि। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं पढ़ाते हैं कुछ समझते हैं वह छीपी नहीं रहती। झट कहेंगे बाबा हम फलाने जगह जाये समझाते हैं। अभी वह समय आया नहीं है। समय आवेगा तो फिर बहुत सर्विस करेंगे। सर्विस तो ढेर पड़ी हुई हैं। जंगल में बन्दर हैं। जंगल को मंगल बनाना है। कितनी अथाह सर्विस है। रोटी टूकड़ भी खाया न खाया। धंधे वाले लोग ऐसा करते हैं। अच्छे ग्राहक आ जाते हैं तो फिर खाया न खाया वह भागे। धन कमाने का रहता है ना। यहां तो तुमको बेहद के बाप से अथाह धन मिलता है। मल टाईम पड़ा हुआ है परन्तु कल शरीर छूट जावे तो। शरीर पर भरोसा थोड़े ही है। ढेर के ढेर के करते रहते हैं। विनाश होना ही है। तुम्हारे लिए तो विस्वा मौत मलू-का शिकार है। तुम्हारी खुशी का पारा वार नहीं। बेअन्त खुशी होनी है। तुमको बहुतों का कल्याण करना है। पिछाड़ी को कर्मातीत अवस्था होनी है। याद करते2 अशरीरी बन जावेंगे। तब ही अनाज उड़ेंगे। यह बड़ी मेहनत है। कोई तो बहुत सर्विस करते रहते हैं। दिन प्रति दिन सर्विस बहुत बढ़नी है। यह एक म्युज़ियम थोड़े ही पूरा होगा। सैकड़ों लोग तुम्हारे पास आवेंगे। तुमको फुर्सत नहीं मिलेगा। सब से जास्ती तुम्हारी दुकान निकलेगी। इन अविनाशी ज्ञान रत्नों की। सभी समझ जावेंगे इन बिगर तो कोई काम की चीज़ ही नहीं

BRAHMA KUMARIS
WARD NO. 53 HOUSE NO. 657,
GALI BANGLA WALI, MEHRAULI, NEW DELHI-30.

देहली के महरौली सेन्टर का मकान बदली हुआ है। जिसकी एड्रेस यह है:-